चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय,
हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम

The Tribune

Workshop on ashwagandha

HISAR, MARCH 11

Chaudhary Charan Singh Haryana Agricultural University organised a workshop on ashwagandha at its agriculture college. V-C Prof BR Kamboj said the university would provide 2 lakh saplings of improved varieties of ashwagandha to farmers for promoting its cultivation. — TNS

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम

THE TIMES OF INDIA
INDIA'S LARGEST ENGLISH NEWSPAPER

'Produce more Ashwagandha'

Hisar: The annual production of ashwagandha roots is around 1,123.6 tonnes, whereas the present day requirement is 3,222.4 tonnes, HAU vice-chancellor Prof B R Kamboj said, adding that therefore, there is an excellent scope for farmers to cultivate ashwagandha on a commercial scale. Addressing a worksop on the subject of Ashwagandha campaign in the Agriculture College of the University as a chief guest, Kamboj said the roots of Ashwagandha are hard and can be stored for a long time after proper drying. In the coming kharif season, HAU university will also provide 2 lakh saplings of improved varieties of Ashwagandha to the farmers to promote the its cultivation, he said.

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अमर उजाला	12.3.24	4	6-8

अश्वगंधा की उन्नत किस्मों के 2 लाख पौधे किसानों को दिलाए जाएंगे : प्रो. कांबोज

एचएयू में हुई कार्यशाला में अश्वगंधा उगाने से स्वास्थ्य लाभ, उद्यमिता बताई गई

संवाद न्यूज एजेंसी

हिसार के एचएयू में अश्वगंधा अभियान के तहत आयोजित कार्यशाला में पुस्तक का विमोचन करते कुलपति प्रो. बीआर कांबोज सहित अन्य अधिकारीगण। संवाद

हिसार। अश्वगंधा प्रकृति का बहुमूल्य उपहार है। शक्तिवर्धक एवं रोग प्रतिरोधी क्षमता जैसे विलक्षण गुणों से भरपूर होने के कारण इसे 'शाही जड़ी बूटी' की संज्ञा भी दी गई है। आधुनिक युग में इस औषधीय पौधे की बढ़ती मांग को देखते हुए वैज्ञानिकों को अश्वंगधा पर अधिक से अधिक शोध कर इसकी नई किस्में इजाद करें। साथ ही किसानों को अश्वगंधा की खेती कर दूसरों को भी इसके लिए जागरूक करने की आवश्यकता है। ये बात हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर कांबोज ने कहे। वे विश्वविद्यालय के कृषि महाविद्यालय में अश्वगंधा अभियान विषय पर आयोजित कार्यशाला में बतौर मुख्यातिथि संबोधित कर रहे थे।

वीसी ने कहा कि यूनानी व आयुर्वेद पद्धति में औषधीय पौधों का अति महत्वपूर्ण योगदान है। उन्होंने अश्वंगधा की विशेषताएं बताते हुए कहा कि इस जड़ी बूटी का इस्तेमाल एंटीऑक्सीडेंट, चिंतानाशक, याददाश्त बढ़ाने वाला, कैंसर रोधी, सूजन रोधी सहित अन्य बीमारियों से राहत पाने के लिए किया जाता है। मुख्यातिथि ने कहा कि आगामी सीजन में विश्वविद्यालय द्वारा अश्वगंधा की खेती को बढ़ावा देने के लिए अश्वगंधा की उन्नत किस्मों के 2 लाख पौधे किसानों को उपलब्ध करवाएं जाएंगे।

मुख्य वक्ता के तौर पर मौजूद कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. एसके पाहुजा ने बताया कि प्राचीन काल से ही अश्वगंधा पर ऋषि-मुनियों ने शोध किए ताकि भावी पीढ़ी को इस औषधीय पौधे के फायदों से लेकर अन्य गुणों के बारे में पता लग सकें।

वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. राजेश आर्य ने कविता के माध्यम से अश्वगंधा के गुणों का उल्लेख किया। इसके अलावा छात्र सुलेंद्र व छात्रा हिमांशी ने अश्वगंधा की विशेषताओं पर प्रकाश डालते हुए इसके फायदें व गुणों को सभी से साझा किया। सेवानिवृत्त प्रधान वैज्ञानिक डॉ. ओपी नेहरा ने भी अश्वगंधा के गुणों को विस्तार से बताया।

मुख्यातिथि ने अश्वगंधा इम्यूनिटी बूस्टर मेडिकल प्लांट व अश्वगंधा की खेती नामक पुस्तकों का विमोचन भी किया। मंच संचालन सहायक वैज्ञानिक डॉ. रवि बैनीवाल ने किया। मुख्यातिथि ने अश्वगंधा अभियान के तहत विभिन्न स्कूलों व कॉलेजों में विजेता रहे विद्यार्थियों व किसानों को सम्मानित किया।

पोस्टर मेकिंग : मुस्कान प्रथम, रितिक यादव दूसरे स्थान पर रही। कॉलेज ऑफ कम्युनिटी साइंस में पहले स्थान पर मुस्कान सिंधू, दूसरे स्थान पर गरिमा रही। एचएयू स्थित विद्यालय में पहले स्थान पर कक्षा छठी की रितिका, दूसरे स्थान पर कक्षा 7वीं की आंचल रही। विवि के कैंपस स्कूल में प्रथम स्थान पर 11वीं कक्षा की छात्रा कीर्ति, आठवीं कक्षा के छात्रा सूर्या दूसरे स्थान पर रही।

भाषण प्रतियोगिता में प्रथम स्थान हिमांशी व दूसरा स्थान सुलेंद्र रहे। साथ ही भाषण प्रतियोगिता में कैंपस स्कूल के प्रथम स्थान पर ज्योति, दूसरे स्थान पर तनिष्का व तीसरे स्थान पर स्मृति पर रही। कार्यशाला में अश्वगंधा पौध की खेती करने वाले व दूसरों को इसके लिए प्रेरित करने वाले किसानों को भी मुख्यातिथि ने सम्मानित किया, जिनमें गांव नंगथला निवासी रविंद्र कुमार, गांव भोडिया निवासी धर्मपाल, गांव टोकस निवासी अभिजीत, गांव कोहली निवासी ओमप्रकाश, गांव रावलवास निवासी कृष्ण कुमार व गांव सरसौद निवासी सुंदर शामिल थे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पंजाब केसरी	12.3.24	2	4-5

हकृवि में अश्वगंधा अभियान विषय पर कार्यशाला आयोजित

हिसार, 11 मार्च (ब्यूरो): अश्वगंधा प्रकृति का बहुमूल्य उपहार है। शक्तिवर्धक एवं रोग प्रतिरोधी क्षमता जैसे विलक्षण गुणों से भरपूर होने के कारण इसे 'शाही जड़ी बूटी' की संज्ञा भी दी गई है। आधुनिक युग में इस औषधीय पौधे की बढ़ती मांग को देखते हुए वैज्ञानिकों को अश्वगंधा पर अधिक से अधिक शोध कर इसकी नई किस्में इजाद करें। साथ ही किसानों को अश्वगंधा की खेती कर दूसरों को भी इसके लिए जागरूक करने की आवश्यकता है।

ये विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने कहे। वे विश्वविद्यालय के कृषि महाविद्यालय में अश्वगंधा अभियान विषय पर आयोज़ित कार्यशाला में बतौर मुख्यातिथि संबोधित कर रहे थे। यह कार्यशाला भारत सरकार के आयुष मंत्रालय में राष्ट्रीय औषधीय पादप बोर्ड के सौजन्य से विश्वविद्यालय के अनुवांशिकी एवं पादप प्रजनन विभाग के औषधीय, संगध एवं क्षमतावान फसल अनुभाग द्वारा आयोजित की गई थी। मुख्यातिथि ने कहा कि आगामी सीजन में अश्वगंधा की उन्नत किस्मों के 2 लाख पौधे किसानों को उपलब्ध करवाएं जाएंगे। उन्होंने कहा कि वर्तमान समय में पाठ्यक्रम के अंदर अश्वगंधा के गुणों को शामिल करना चाहिए। कार्यशाला के दौरान अश्वगंधा की खेती एवं उद्यमिता की अपार संभावनाओं पर विस्तार से चर्चा की गई।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक जागरण	12.3.24	4	3-5

अश्वगंधा की खेती से स्वास्थ्य लाभ और उद्यमिता की अपार संभावनाएं: काम्बोज

जागरण संवाददाता, हिसार : अश्वगंधा प्रकृति का बहुमूल्य उपहार है। शक्तिवर्धक एवं रोग प्रतिरोधी क्षमता जैसे विलक्षण गुणों से भरपूर होने के कारण इसे 'शाही जड़ी बूटी' की संज्ञा भी दी गई है। आधुनिक युग में इस औषधीय पौधे की बढ़ती मांग को देखते हुए वैज्ञानिकों को अश्वगंधा पर अधिक से अधिक शोध कर इसकी नई किस्में इजाद करें। साथ ही किसानों को अश्वगंधा की खेती कर दूसरों को भी इसके लिए जागरूक करने की आवश्यकता है। ये शब्द चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने कहे। वे विश्वविद्यालय के कृषि महाविद्यालय में अश्वगंधा अभियान विषय पर आयोजित कार्यशाला में बतौर मुख्यातिथि संबोधित कर रहे थे। प्रो. बीआर काम्बोज ने कहा कि यूनानी व आयुर्वेद पद्धति में औषधीय पौधों का अति महत्वपूर्ण योगदान है। उन्होंने कहा कि इस जड़ी बूटी का इस्तेमाल एंटीआक्सीडेंट, चिंतानाशक, याददाश्त बढ़ाने वाला,

हकृवि में अश्वगंधा अभियान के तहत आयोजित कार्यशाला में पुस्तक का विमोचन करते कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज सहित अन्य अधिकारीगण। ● पीआरओ

कैंसर रोधी, सूजन रोधी सहित अन्य बीमारियों से राहत पाने के लिए किया जाता है। साथ ही यौन रोग के इलाज व शरीर को बलवर्धक बनाने में भी अश्वगंधा का प्रयोग किया जाता है। उन्होंने कहा कि देश की 65 प्रतिशत आबादी प्राथमिक स्वास्थ्य देखभाल व आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए आयुर्वेद व औषधीय जड़ी-बूटियों का उपयोग करती है।

कुलपति ने कहा कि वर्तमान समय में अश्वगंधा की जड़ों का उत्पादन करीब 1123.6 टन है, जबकि आवश्यकता 3222.4 टन है। इसलिए इसमें उद्यमिता की अपार संभावनाएं है। कुलपति ने कहा कि आगामी सीजन में विश्वविद्यालय द्वारा अश्वगंधा की खेती को बढ़ावा देने के लिए अश्वगंधा की उन्नत किस्मों के दो लाख पौधे किसानों को उपलब्ध करवाएं जाएंगे।

कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डा. एसके पाहुजा ने बताया कि प्राचीन काल से ही अश्वगंधा पर ऋषि-मुनियों ने शोध किए ताकि भावी पीढ़ी को इस औषधीय पौधे के फायदों से लेकर अन्य गुणों के बारे में पता लग सकें। औषधीय, संगध एवं क्षमतावान फसल अनुभाग के प्रभारी डा. पवन कुमार ने अश्वगंधा अभियान के तहत विभिन्न प्रतियोगिताएं, कार्यक्रमों व क्रियाकलापों पर विस्तृत रिपोर्ट प्रस्तुत पेश की।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
हरि भूमि	12.3.24	9	5-8

हकृवि में अश्वगंधा अभियान विषय पर कार्यशाला का आयोजन

अश्वगंधा की खेती से उद्यमिता की अपार संभावनाएं : प्रो. काम्बोज

- विवि किसानों को अश्वगंधा की उन्नत किस्मों के 2 लाख पौधे उपलब्ध करवाएगा

हरिभूमि न्यूज ▶▶| हिसार

अश्वगंधा प्रकृति का बहुमूल्य उपहार है। शक्तिवर्धक एवं रोग प्रतिरोधी क्षमता जैसे विलक्षण गुणों से भरपूर होने के कारण इसे शाही जड़ी बूटी की संज्ञा भी दी गई है। आधुनिक युग में इस औषधीय पौधे की बढ़ती मांग को देखते हुए वैज्ञानिकों को अश्वगंधा पर अधिक से अधिक शोध कर इसकी नई किस्में इजाद करें। साथ ही किसानों को अश्वगंधा की खेती कर दूसरों को भी इसके लिए जागरूक करने की आवश्यकता है। ये विचार हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने कही। वे विश्वविद्यालय के कृषि महाविद्यालय में अश्वगंधा अभियान विषय पर आयोजित कार्यशाला में बतौर मुख्यातिथि संबोधित कर रहे थे। यह कार्यशाला भारत सरकार के आयुष मंत्रालय में राष्ट्रीय औषधीय पादप बोर्ड के सौजन्य से विश्वविद्यालय के अनुवांशिकी एवं पादप प्रजनन विभाग के औषधीय, संगध एवं क्षमतावान फसल अनुभाग द्वारा आयोजित की गई थी।

हिसार। हकृवि में अश्वगंधा अभियान के तहत आयोजित कार्यशाला में पुस्तक का विमोचन करते कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज सहित अन्य अधिकारीगण। फोटो: हरिभूमि

मुख्यातिथि प्रो. बीआर काम्बोज ने संबोधित करते हुए कहा कि यूनानी व आयुर्वेद पद्धति में औषधीय पौधों का अति महत्वपूर्ण योगदान है। उन्होंने अश्वगंधा की विशेषताएं बताते हुए कहा कि इस जड़ी बूटी का इस्तेमाल एंटीऑक्सीडेंट, चिंतानाशक, याददाश्त बढ़ाने वाला, कैंसर रोधी, सूजन रोधी सहित अन्य बीमारियों से राहत पाने के लिए किया जाता है। मुख्यातिथि ने कहा कि आगामी सीजन में विश्वविद्यालय द्वारा अश्वगंधा की खेती को बढ़ावा देने के लिए अश्वगंधा की उन्नत किस्मों के 2 लाख पौधे किसानों को उपलब्ध करवाए जाएंगे। मुख्य वक्ता के तौर पर मौजूद कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. एसके पाहुजा ने बताया कि प्राचीन काल से ही अश्वगंधा पर ऋषि-मुनियों ने शोध किए ताकि भावी पीढ़ी को इस औषधीय पौधे के फायदों से लेकर अन्य गुणों के बारे में पता लग सकें।

औषधीय, संगध एवं क्षमतावान फसल अनुभाग के प्रभारी डॉ पवन कुमार ने अश्वगंधा अभियान के तहत विभिन्न प्रतियोगिताएं, कार्यक्रमों व क्रियाकलापों पर विस्तृत रिपोर्ट प्रस्तुत पेश की। सेवानिवृत प्रधान वैज्ञानिक डॉ. ओपी नेहरा ने भी अश्वगंधा के गुणों को विस्तार से बताया। मुख्यातिथि ने अश्वगंधा इम्यूनिटी बूस्टर मेडिकल प्लांट व अश्वगंधा की खेती नामक पुस्तकों का विमोचन भी किया। मंच संचालन सहायक वैज्ञानिक डॉ. रवि बैनीवाल ने किया।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अजीत समाचार	12.3.24	5	3-7

अश्वगंधा की खेती से स्वास्थ्य लाभ एवं उद्यमिता की अपार संभावनाएं : प्रो. काम्बो

हिसार, 11 मार्च (विरेन्द्र वर्मा): अश्वगंधा प्रकृति का बहुमूल्य उपहार है। शक्तिवर्धक एवं रोग प्रतिरोधी क्षमता जैसे विलक्षण गुणों से भरपूर होने के कारण इसे 'शाही जड़ी बूटी' की संज्ञा भी दी गई है। आधुनिक युग में इस औषधीय पौधे की बढ़ती मांग को देखते हुए वैज्ञानिकों को अश्वगंधा पर अधिक से अधिक शोध कर इसकी नई किस्में इजाद करें। साथ ही किसानों को अश्वगंधा की खेती कर दूसरों को भी इसके लिए जागरूक करने की आवश्यकता है। ये विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने कहे। वे विश्वविद्यालय के कृषि महाविद्यालय में अश्वगंधा अभियान विषय पर आयोजित कार्यशाला में बतौर मुख्यातिथि संबोधित कर रहे थे। यह कार्यशाला भारत सरकार के आयुष मंत्रालय में राष्ट्रीय औषधीय पादप बोर्ड के सौजन्य से विश्वविद्यालय के अनुवांशिकी एवं पादप प्रजनन विभाग के औषधीय, संगध एवं क्षमतावान फसल अनुभाग द्वारा आयोजित की गई थी। मुख्यातिथि प्रो. बी.आर. काम्बोज ने संबोधित करते हुए कहा कि यूनानी व आयुर्वेद पद्धति में औषधीय पौधों का अति महत्वपूर्ण योगदान है। उन्होंने अश्वगंधा की विशेषताएं बताते हुए कहा कि इस जड़ी बूटी का इस्तेमाल एंटीऑक्सीडेंट, चिंतानाशक, याददाश्त बढ़ाने वाला, कैंसर रोधी, सूजन रोधी सहित अन्य बीमारियों से राहत पाने के लिए किया जाता है। साथ ही यौन रोग के इलाज व शरीर को बलवर्धक बनाने में भी अश्वगंधा का प्रयोग किया जाता है। उन्होंने कहा कि देश की 65 प्रतिशत आबादी प्राथमिक स्वास्थ्य देखभाल व आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए आयुर्वेद व औषधीय जड़ी-बूटियों का उपयोग करती है। मुख्यातिथि ने देश में अश्वगंधा के उत्पादन की

हकृवि में अश्वगंधा अभियान के तहत आयोजित कार्यशाला में पुस्तक का विमोचन करते हुए कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज सहित अन्य अधिकारी।

स्थिति को बताते हुए कहा कि वर्तमान समय में अश्वगंधा की जड़ों का उत्पादन करीब 1123.6 टन है, जबकि आवश्यकता 3222.4 टन है। इसलिए इसमें उद्यमिता की अपार संभावनाएं है। मुख्य वक्ता के तौर पर मौजूद कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. एस.के.पाहुजा ने बताया कि प्राचीन काल से ही अश्वगंधा पर ऋषि-मुनियों ने शोध किए ताकि भावी पीढ़ी को इस औषधीय पौधे के फायदों से लेकर अन्य गुणों के बारे में पता लग सकें। औषधीय, संगध एवं क्षमतावान फसल अनुभाग के प्रभारी डॉ पवन कुमार ने अश्वगंधा अभियान के तहत विभिन्न प्रतियोगिताएं, कार्यक्रमों व क्रियाकलापों पर विस्तृत रिपोर्ट प्रस्तुत पेश की। वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. राजेश आर्य ने कविता के माध्यम से अश्वगंधा के गुणों का उल्लेख किया। इसके अलावा छात्र सुलेंद्र व छात्रा हिमांशी ने अश्वगंधा की विशेषताओं पर प्रकाश डालते हुए इसके फायदें व गुणों को सभी से साझा किया। सेवानिवृत प्रधान वैज्ञानिक डॉ. ओपी नेहरा ने अश्वगंधा के गुणों को विस्त बताया। मुख्यातिथि ने अश्व इम्यूनिटी बूस्टर मेडिकल प्ला अश्वगंधा की खेती नामक पु का विमोचन भी किया। मंच संच सहायक वैज्ञानिक डॉ. रवि बैन ने किया। मुख्यातिथि ने अश्व अभियान के तहत विभिन्न स्कू कॉलेजों में विजेता रहे विद्यार्थि किसानों को सम्मानित किया अवसर पर विश्वविद्यालय अधिकारीगण सहित इससे समस्त महाविद्यालय के अधिष निदेशक, विभागाध्यक्ष, वैज्ञा शोधार्थी सहित सेवानिवृत वैज्ञ डॉ. पीके वर्मा, डॉ. ईश्वर सिंह और काफी संख्या में किसा विभिन्न स्कूलों व महाविद्यालय विद्यार्थी उपस्थित रहे। अश्व अभियान कार्यशाला के अश्वगंधा की खेती एवं उद्यमित अपार संभावनाओं पर विस्ता चर्चा की गई।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
चिराग टाइम्स न्यूज	11.03.2024	--	--

अश्वगंधा की खेती से स्वास्थ्य लाभ एवं उद्यमिता की अपार संभावनाएं : प्रो. बी.आर. काम्बोज

चिराग टाइम्स न्यूज

हिसार।अश्वगंधा प्रकृति का बहुमूल्य उपहार है। शक्तिवर्धक एवं रोग प्रतिरोधी क्षमता जैसे विलक्षण गुणों से भरपूर होने के कारण इसे 'शाही जड़ी बूटी' की संज्ञा भी दी गई है। आधुनिक युग में इस औषधीय पौधे की बढ़ती मांग को देखते हुए वैज्ञानिकों को अश्वगंधा पर अधिक से अधिक शोध कर इसकी नई किस्में इजाद करें। साथ ही किसानों को अश्वगंधा की खेती कर दूसरों को भी इसके लिए जागरूक करने की आवश्यकता है। ये विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने कहे। वे विश्वविद्यालय के कृषि महाविद्यालय में अश्वगंधा अभियान विषय पर आयोजित कार्यशाला में बतौर मुख्यातिथि संबोधित कर रहे थे। यह कार्यशाला भारत सरकार के आयुष मंत्रालय में राष्ट्रीय औषधीय पादप बोर्ड के सौजन्य से विश्वविद्यालय के अनुवांशिकी एवं पादप प्रजनन विभाग के औषधीय, सुगंध एवं क्षमतावान फसल अनुभाग द्वारा आयोजित की गई थी।

अश्वगंधा की उन्नत किस्मों के 2 लाख पौधे किसानों को उपलब्ध करवाएं जाएंगे = कुलपति मुख्यातिथि प्रो. बी.आर. काम्बोज ने संबोधित करते हुए कहा कि यूनानी व आयुर्वेद पद्धति में औषधीय पौधों का अति महत्वपूर्ण योगदान है। उन्होंने अश्वगंधा की विशेषताएं बताते हुए

कहा कि इस जड़ी बूटी का इस्तेमाल एंटीऑक्सीडेंट, चिंतानाशक, याददाश्त बढ़ाने वाला, कैंसर रोधी, सूजन रोधी सहित अन्य बीमारियों से राहत पाने के लिए किया जाता है। साथ ही यौन रोग के इलाज व शरीर को बलवर्धक बनाने में भी अश्वगंधा का प्रयोग किया जाता है।

मुख्य वक्ता के तौर पर मौजूद कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. एस.के.पाहुजा ने बताया कि प्राचीन काल से ही अश्वगंधा पर ऋषि-मुनियों ने शोध किए ताकि भावी पीढ़ी को इस औषधीय पौधे के फायदों से लेकर अन्य गुणों के बारे में पता लग सकें। वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. राजेश आर्य ने कविता के माध्यम से अश्वगंधा के गुणों का उल्लेख किया। इसके अलावा छात्र सुलेंद्र व छात्रा हिमांशी ने अश्वगंधा की विशेषताओं पर प्रकाश डालते हुए इसके फायदें व गुणों को सभी से साझा किया। सेवानिवृत प्रधान वैज्ञानिक डॉ. ओपी नेहरा ने भी अश्वगंधा के गुणों को विस्तार से बताया। मुख्यातिथि ने अश्वगंधा इम्यूनिटी बूस्टर मेडिकल प्लांट व अश्वगंधा की खेती नामक पुस्तकों का विमोचन भी किया। मंच संचालन सहायक वैज्ञानिक डॉ. रवि चैनीवाल ने किया।

मुख्यातिथि ने अश्वगंधा अभियान के तहत विभिन्न स्कूलों व कॉलेजों में विजेता रहे विद्यार्थियों व किसानों को सम्मानित किया। पोस्टर मेकिंग में = प्रथम स्थान पर मुस्कान रही, जबकि रितिका यादव दूसरे व तीसरे स्थान पर दीक्षा रही। कॉलेज ऑफ कम्युनिटी साइंस में पहले स्थान पर मुस्कान सिंधु, दूसरे स्थान पर गरिमा व तीसरे स्थान पर शशि किरण रही। हकृवि स्थित राजकीय उच्च विद्यालय में पहले स्थान पर कक्षा छठी की रितिका, दूसरे स्थान पर कक्षा 7वीं की आंचल व तीसरे स्थान पर कक्षा आठवीं की प्रिया रही। विश्वविद्यालय के कैंपस स्कूल में प्रथम स्थान पर 11वीं कक्षा की छात्रा कीर्ति, दूसरे स्थान पर आठवीं कक्षा के छात्रा सूर्या व तीसरे स्थान पर कक्षा आठवीं की छात्रा प्रज्ञा रही। भाषण प्रतियोगिता में प्रथम स्थान हिमांशी व दूसरा स्थान सुलेन्द्र रहे। साथ ही भाषण प्रतियोगिता में कैंपस स्कूल के प्रथम स्थान पर ज्योति, दूसरे स्थान पर तनिष्का व